जीवन कौशल हेतु पाठ्यक्रम

सत्यमेव जयते
Goverment Of India

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली–110002

जीवन कौशल हेतु पाठ्यक्रम
2019

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली–110002

सत्यमेव जयते
Goverment Of India

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

© विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

अगस्त 2019

सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली–110002 द्वारा प्रकाशित।

चंदू प्रेस, डी– 97, शकरपुर, दिल्ली– 110092, फोनः +919810519841, 011–22526936

ई–मेलः **chandupress@gmail.com** द्वारा डिजाईन और मुद्रित किया गया।

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन 5

भूमिका 6

1. जीवन कौशल कार्यक्रम 7

2. पाठ्यक्रम 1 : संप्रेषण कौशल 10

3. पाठ्यक्रम 2 : पेशेवर कौशल 13

4. पाठ्यक्रम 3 : नेतृत्व और प्रबंधन कौशल 18

5. पाठ्यक्रम 4 : सार्वभौमिक मानव मूल्य 22

6 अतिरिक्त प्रयोगात्मक मॉड्यूल अथवा क्रियात्मक वैकल्पिक पाठ्यक्रम 25

प्राक्कथन

इस तथ्य को स्वीकार करते हुए कि जीवन कौशल हमारे स्नातकों को रोजगार परक बनाने और उनके जीवन में सफल होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने जीवन कौशल पर पाठ्यक्रमों के विकास सहित विभिन्न पहल की हैं। जीवन कौशल पाठ्यक्रम हमारे स्नातकों को उनकी वास्तविक क्षमता को प्रकट करने और उन्हें सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक बनाने में सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है।

बेहतर प्रतिभा को प्राप्त करने के लिए, उच्च शिक्षा संस्थानों को संचार कौशल, व्यावसायिक कौशल, नेतृत्व और प्रबंधन कौशल, अन्तर्वैयक्तिक कौशल और सार्वभौमिक मानव मूल्यों जैसे जीवन कौशल प्रदान करने पर अधिक ध्यान केंद्रित करने का समय है। जीवन कौशल में किसी व्यक्ति द्वारा कक्षा में सीखने अथवा जीवन के अनुभव के माध्यम से अर्जित मानव प्रतिभाओं के समूह शामिल होते हैं जो उन्हें दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं से निपटने में सहायता प्रदान कर सकता है। इसमें वे मूल कौशल शामिल हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं और समाज की बेहतरी के लिए आंतरिक के साथ-साथ बाह्य रूप से प्राप्त करना आवश्यक है।

मैं इस अवसर पर विशेषज्ञ समिति के सदस्यों को उनके बहुमूल्य प्रयासों और अंडर ग्रेजुएट छात्रों के लिए इस जीवन कौशल पाठ्यक्रम को विकसित करने के लिए धन्यवाद देता हूं। मैं प्रोफेसर भूषण पटवर्धन, उपाध्यक्ष, वि.अ.आ., प्रोफेसर रजनीश जैन, सचिव, वि.अ.आ. द्वारा दिए गए मार्गदर्शन और सहायता के लिए उनका अभिनंदन करता हूं। डॉ. रेणु बत्रा, अपर सचिव, वि.अ.आ. और उनकी टीम इस कार्य को पूरा करने में सहायता प्रदान करने और प्रयासों के लिए सराहना की पात्र है।

मैं सभी विश्वविद्यालयों/संस्थानों के कुलपतियों/निदेशकों से भारत में उच्च शैक्षणिक संस्थानों में जीवन कौशल पाठ्यक्रम को लागू करने के लिए उचित कदम उठाने का आग्रह करता हूं।

(प्रो0 धीरेन्द्र पाल सिंह)
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

नई दिल्ली
2 अगस्त, 2019

भूमिका

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (वि.अ.आ.) के गुणवत्ता अधिदेश के अनुसार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को उच्चतर शिक्षा संस्थानों में नामांकित विद्यार्थियों, विशेषकर स्नातकपूर्व स्तर के विद्यार्थियों हेतु जीवन कौशल (व्यवहार कौशल सहित) प्रदान करने के लिए पहल करने की आवश्यकता है। जीवन कौशल, कम दृष्टिगोचर होने वाले लक्षण होने के बावजूद विद्यार्थियों की रोजगारपरकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें अन्य बातों के साथ–साथ संप्रेषण कौशल, अन्तर्वैयक्तिक कौशल, समय प्रबंधन, दल कार्य, लचीलापन, समस्या समाधान, व्यावसायिक कौशल, निर्णय लेने के कौशल, नेतृत्व क्षमता और सार्वभौमिक मूल्य शामिल हो सकते हैं।

जीवन कौशलों को व्यक्तिगत और पेशेवर मामलों के प्रबंधन में समुचित और जिम्मेदारीपूर्ण तरीके से प्रयुक्त व्यवहारों के रूप में परिभाषित किया गया है। वे शिक्षण या प्रत्यक्ष अनुभव से अर्जित मानव कौशलों का समुच्चय भी है जिनका उपयोग दैनिक, व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में आने वाली समस्याओं और प्रश्नों को संभालने के लिए किया जाता है। हमेशा कहा जाता है कि जीवन कौशल वे मूल कौशल हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं और दूसरे लोगों की बेहतरी के लिए आंतरिक और बाह्य रूप से अर्जित और आत्मसात करना आवश्यक है।

इस प्रकार जीवन कौशल व्यक्तिगत, पेशेवर और सामाजिक जीवन में चुनौतीपूर्ण स्थितियों में युवा लोगों के मानस को सशक्त करने के साधन हैं। जीवन कौशलों को अपनाया जाना उत्कृष्टता की ओर बढ़ने की कुंजी है।

जीवन कौशल कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वयं को और दूसरों को समझने, अंतर्वैयक्तिक कौशल, उच्च निष्पादन दलों, नेतृत्व क्षमता, संप्रेषण और प्रस्तुतिकरण कौशल, समस्या समाधान की तकनीकों, निर्णय लेने की प्रक्रिया, व्यक्तिगत और पेशेवर उत्कृष्टता हेतु सृजनात्मकता और नवप्रवर्तन को बढ़ावा देने, तनाव प्रबंधन, समय प्रबंधन और विवाद प्रबंधन तथा मानव मूल्यों को मन में बैठाने के क्षेत्रों में व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों तरह के कौशलों को आत्मसात् करना है। इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों और सुगमकर्ता, गुरु और प्रशिक्षक के रूप में शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी अपेक्षित है। इस प्रयोजनार्थ इन पाठ्यक्रमों में विभिन्न क्रियाकलाप– मौखिक प्रस्तुति, आशु भाषण, प्रश्नोत्तरी, वाद–विवाद, वृत–अध्ययन, सृजनात्मक सोच, दल गठन अभ्यास, क्षेत्र का दौरा, परियोजनाएं, मनोमितीय विश्लेषण इत्यादि शामिल किए गए हैं। यह माना जाता है कि किसी पेशेवर व्यक्ति के लिए आज के जटिल परिवेश में सफल होने के लिए जीवन कौशल मॉड्यूल की पाठ्यक्रम संरचना में उल्लिखित सभी संगत क्षेत्रों में अपनी महारत प्रदर्शित करना आवश्यक है।

जीवन कौशल पाठ्यक्रम

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम	मॉड्यूल	घंटे	क्रेडिट
1.	संप्रेषण कौशल	श्रवण	4 घंटे	02
		वाचन	6 घंट	
		पठन	3 घंट	
		लेखन और लेखन के विविध प्रकार	4 घंट	
		डिजिटल साक्षरता	4 घंट	
		सोशल मीडिया का प्रभावी उपयोग	4 घंट	
		गैर-मौखिक संप्रेषण	5 घंट	
2.	पेशेवर कौशल क. कैरियर कौशल	जीवनवृत तैयार करने का कौशल	3 घंट	02
		साक्षात्कार कौशल	5 घंट	
		समूह परिचर्चा कौशल	4 घंट	
		कॅरियर के अवसरों की तलाश	3 घंट	
	पेशेवर कौशल ख. टीम कौशल	प्रस्तुति कौशल	5 घंट	
		विश्वास और सहयोग	2 घंट	
		टीम कौशल के रूप में श्रवण	2 घंट	
		विचार-मंथन	2 घंट	
		सामाजिक और सांस्कृतिक शिष्टाचार	2 घंट	
		आंतरिक सम्प्रेषण	2 घंट	
3.	नेतृत्व और प्रबंधन कौशल	नेतृत्व कौशल	6 घंट	02
		प्रबंधकीय कौशल	6 घंट	
		उद्यमितापरक कौशल	6 घंट	
		नवप्रवर्तनकारी नेतृत्व और डिजाइन चिंतन	6 घंट	
		नैतिक आचार और सत्यनिष्ठा	6 घंट	
4.	सार्वभौमिक मानव मूल्य	प्रेम और करूणा	5 घंट	02
		सत्य	5 घंट	
		अहिंसा	5 घंट	
		नीति परायणता	5 घंट	
		शांति	4 घंट	
		सेवा	3 घंट	
		त्याग	3 घंट	

जीवन कौशल कार्यक्रम

पाठ्यक्रम के उद्देश्य :

पाठ्यक्रम के उद्देश्य है :

1. व्यक्ति के सभी प्रकार के भय और असुरक्षाओं पर विजय प्राप्त करने में सहायता करके स्वयं के बारे में पूर्ण रूप से जागरूक होने और अंदर से बाहर की ओर तथा बाहर से अन्दर की ओर पूर्ण रूप से विकसित होने की क्षमता में वृद्धि करना।
2. अध्ययन/कार्यस्थल पर व्यक्ति की भावनात्मक क्षमता और भावनात्मक बौद्धिकता के बारे में उसकी जानकारी और जागरूकता में वृद्धि करना।
3. व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से व्यक्ति को अपनी क्षमता का पूर्ण विकास करने का अवसर प्रदान करना
4. अंतर्वैयक्तिक कौशलों का विकास करना और स्वयं तथा दूसरों के सशक्तिकरण के लिए नेतृत्व संबंधी अच्छा व्यवहार अपनाना।
5. उपयुक्त लक्ष्य तय करना, तनाव और समय का प्रभावी प्रबंधन करना।
6. नीतिपरक तरीके से उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सभी स्तरों पर क्षमताओं का सही तरीके से सम्मिश्रण करना।

ज्ञान अर्जन परिणामः

कार्यक्रम के अंत में, शिक्षार्थी :

1. आत्म सक्षमता और विश्वास अर्जित करने,
2. भावनात्मक क्षमता का व्यावहारिक उपयोग करने,
3. बौद्धिक क्षमता अर्जित करने,
4. पेशेवर क्षमता के माध्यम से अतिरिक्त योग्यता अर्जित करने,
5. सामाजिक क्षमता के उच्च बोध को प्राप्त करने,
6. एक परिपूर्ण मानव बनने में सक्षम हो सकेंगे।

जीवन कौशल कार्यक्रम में निम्नलिखित पाठ्यक्रम होंगे :

पाठ्यक्रम 1 : संप्रेषण कौशल

पाठ्यक्रम 2 : पेशेवर कौशल

पाठ्यक्रम 3 : नेतृत्व कौशल

पाठ्यक्रम 4 : सार्वभौम मानव मूल्य

पाठ्यक्रमों का मॉड्यूल सहित नीचे वर्णन किया गया है।

पाठ्यक्रम 1 : संप्रेषण कौशल

पाठ्यक्रम के औचित्य के संदर्भ में :

किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन को आकार देने में संप्रेषण एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह किसी भी संगठन/ संस्था की रीढ़ भी होता है। जीवन में सफलता बहुत हद तक प्रभावी संप्रेषण कौशल पर निर्भर होती है। कम्प्यूटर और डिजिटल मीडिया वाले आज के विश्व में शिक्षार्थियों के लिए और किसी भी संगठन के सुचारू रूप से कार्य करने के लिए एक मजबूत सुदृढ़ संप्रेषण कौशल आधार आवश्यक है।

उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम को निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए तैयार किया गया है:

1. संप्रेषण संबंधी उन सामान्य समस्याओं की पहचान करना जो शिक्षार्थी को उन्नति नहीं करने देती हैं,
2. इस बात की पहचान करना कि उनके गैर–मौखिक संदेश दूसरों को क्या संप्रेषित कर रहे हैं,
3. शिक्षण–ज्ञानार्जन प्रक्रिया में संप्रेषण की भूमिका को समझना,
4. डिजिटल मीडिया के माध्यम से संप्रेषण करना सीखना,
5. सहानुभूति पूर्ण श्रवण के महत्व को समझना,
6. भाषा से इतर संप्रेषण का अन्वेषण करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम :

इस कार्यक्रम के अंत तक प्रतिभागियों में इस बात की स्पष्ट समझ विकसित हो जानी चाहिए कि अच्छे संप्रेषण कौशल क्या हैं और वे अपनी क्षमता में सुधार करने के लिए क्या कर सकते हैं।

क्रेडिट : 02

अवधि : 30 घंटे

मॉड्यूलों की संख्या और शीर्षक

कुल 7 मॉड्यूल

मॉड्यूल 1 श्रवण	**4 घंटे**
मॉड्यूल 2 वाचन	**6 घंटे**
मॉड्यूल 3 पठन	**3 घंटे**
मॉड्यूल 4 लेखन और लेखन के विविध प्रकार	**4 घंटे**
मॉड्यूल 5 डिजिटल साक्षरता	**4 घंटे**
मॉड्यूल 6 सोशल मीडिया का प्रभावी उपयोग	**4 घंटे**
मॉड्यूल 7 गैर–मौखिक संप्रेषण	**5 घंटे**

मॉड्यूल रूपरेखा

मॉड्यूल 1 : श्रवण — 4 घंटे

- प्रभावी श्रवण की तकनीकें
- श्रवण और बोध
- प्रश्न पूछना
- श्रवण में अवरोध

मॉड्यूल 2 : वाचन — 6 घंटे

- उच्चारण
- निरूपण
- शब्द भंडार
- प्रवाह
- सामान्य त्रुटियां

मॉड्यूल 3 : पठन — 3 घंटे

- प्रभावी पठन की तकनीकें
- किसी दिए गए पाठ से विचार और सूचना एकत्रित करना
  - i. पाठ के मुख्य दावे की पहचान करना
  - ii. पाठ के प्रयोजन की पहचान करना
  - iii. पाठ के संदर्भ की पहचान करना
  - iv. उल्लिखित संकल्पना की पहचान करना
- इन विचारों और सूचना का मूल्यांकन करना
  - i. पाठ में प्रयुक्त तर्कों की पहचान करना
  - ii. पाठ में प्रयुक्त अथवा मानित सिद्धांतों की पहचान करना
- पाठ की व्याख्या करना
  - i. यह समझना कि पाठ में क्या कहा गया है
  - ii. यह समझना कि पाठ क्या करता है
  - iii. यह समझना कि पाठ का आशय क्या है

माड्यूल 4 : लेखन और लेखन के विविध प्रकार — 4 घंटे

- दावों का स्पष्ट उल्लेख करना
- मुद्दों की संदिग्धता, अस्पष्टता, अवांछित सामान्यीकरण और अतिसरलीकरण से बचना
- पृष्ठभूमि सूचना उपलब्ध कराना
- दावे के संबंध में प्रभावी तरीके से तर्क करना
- दावों के लिए साक्ष्य उपलब्ध कराना
- अवधारणाओं की व्याख्या करने के लिए उदाहरणों का उपयोग
- परिपाटियों का अनुसरण करना
- समुचित अनुक्रम रखना
- उपयुक्त संकेत– चिह्न तकनीकों का उपयोग
- सुसंरचित होना
  - i. सुगठित तार्किक अनुक्रम
  - ii. कथानक अनुक्रम
  - iii. श्रेणी समूहन

- लेखन के विविध प्रकार
  - i. ई–मेल
  - ii. उच्चतर अध्ययन हेतु प्रस्ताव लेखन
  - iii. बैठकों के कार्यवृत्त का अभिलेखन
  - iv. शिक्षार्थियों के लिए प्रासंगिक लेखन का कोई अन्य प्रकार

माड्यूल 5 : डिजिटल साक्षरता **4 घंटे**

- पेशेवर जीवन में डिजिटल साक्षरता की भूमिका
- कार्यस्थल पर डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की प्रवृत्तियां और अवसर
- इंटरनेट का आधारभूत ज्ञान
- 'एमएस ऑफिस टूल्स' का परिचय
  - i. पेन्ट
  - ii. ऑफिस
  - iii. एक्सेल
  - iv. पावर प्वाइंट

माड्यूल 6 : सोशल मीडिया का प्रभावी उपयोग **4 घंटे**

- सोशल मीडिया वेबसाइटों का परिचय
- सोशल मीडिया के लाभ
- सोशल मीडिया संबंधी आचार और शिष्टाचार
- गूगल–सर्च का बेहतर तरीके से कैसे उपयोग करें
- सोशल मीडिया का उपयोग करने के प्रभावी तरीके
- डिजिटल विपणन का परिचय

माड्यूल 7 : गैर–मौखिक संप्रेषण **5 घंटे**

- गैर–मौखिक संप्रेषण का अर्थ
- गैर–मौखिक संप्रेषण के प्रकारों का परिचय
- गलतफहमियों को तोड़ना
- मुक्त और अवरूद्ध भाव–भंगिमा
- आंखों से संपर्क और चेहरे के हावभाव
- हस्त मुद्राएं
- क्या करें और क्या न करें
- विशेषज्ञों से सीखना
- गतिविधि आधारित ज्ञानार्जन

शिक्षण पद्धति : अनुदेशक के नेतृत्व में प्रशिक्षण, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म (स्वयं) द्वारा अनुपूरित

सामग्री : शिक्षण और ज्ञानार्जन

आकलन : परीक्षा पत्र आधारित या ऑनलाइन आकलन

दृश्य श्रव्य सामग्री सहित संदर्भ ग्रंथ सूची और सुझाई गई पठन सामग्री :

पुस्तकें

- मधुचन्दा सेन 2010, एन इन्ट्रोडक्शन टू क्रिटिकल थिंकिंग, पीयरसन, दिल्ली
- पी.जे सिल्विया (2007) हाऊ टू रीड ए लॉट, अमेरिकन साइकोलोजिकल एसोसिएशन, वाशिंगटन डीसी

पाठ्यक्रम 2 : पेशेवर कौशल

पाठ्यक्रम औचित्य के संदर्भ में :

उच्चतर शिक्षा के महत्वपूर्ण परिणामों में से एक परिणाम है किसी व्यक्ति को नौकरी/ रोजगार बाजार मे प्रवेश करने के लिए तैयार करना। किसी नौकरी– विशेष के लिए अपेक्षित ज्ञान और कौशलों के अतिरिक्त, व्यक्ति को एक सफल और संतुष्ट जीवन हेतु लाभकारी रोजगार पाने के लिए पेशेवर कौशलों की भी आवश्यकता होती है। पेशेवर कौशल, जीवन कौशल का हिस्सा है। व्यक्ति को सहजबोध, तार्किक और विवेचनात्मक सोच, संप्रेषण और अंतर्वैयक्तिक कौशलों का उपयोग करते हुए अपने ऐसे पेशेवर कौशलों का प्रदर्शन करने में सक्षम होना चाहिए जो संज्ञानात्मक/सृजनात्मक कौशलों तक ही सीमित न हो। इन कौशलों, व्यवहार और कार्यफल की गुणवत्ता से रोजगारपरकता में वृद्धि होती है।

यह कॅरियर कौशल एक उपयुक्त जीवनवृत तैयार करने, साक्षात्कार का सामना करने में होने वाली त्रुटियों को दूर करने और इसके लिए होने वाली समूह परिचर्चा में सक्रिय और प्रभावी रूप से भागीदारी करने की योग्यता प्रदान करके व्यक्ति का सशक्तिकरण करते हैं। यह बात भी बहुत महत्वपूर्ण है कि शिक्षार्थियों/ व्यक्तियों के पास अपनी अंतर्निहित शक्तियों और दुर्बलताओं को ध्यान में रखते हुए अपने लिए कॅरियर के अवसरों की तलाश करने के लिए अपेक्षित जानकारी हो।

यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षार्थी/व्यक्ति नई चुनौतियों और अवसरों का सामना करने के लिए अच्छी तरह से तैयार हों। हमारे जीवन यापन, ज्ञानार्जन और कार्य करने के तरीकों में प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग के साथ शिक्षार्थियों/व्यक्तियों के लिए यह महत्वपूर्ण हो गया है कि वे कम्प्यूटिंग की आधारभूत संकल्पनाओं का उपयोग करने में सक्षम हों और उनमें उत्कृष्ट ''टीम कौशल'' भी हों। मिलजुलकर कार्य करने से जटिल समस्याओं का समाधान ढूंढने में सहायता मिलती है जिससे व्यक्तियों को नए विचारों और परिप्रेक्ष्यों को सामने रखने का अवसर मिलता है। इससे शिक्षार्थी/व्यक्तियों को डिजाइन करने, उसको विकसित करने, समस्या का समाधान करने और अपने अनुभव और कौशलों के आधार पर स्थितियों के अनुकूल ढ़लने का अवसर भी मिलता है।

क्रेडिट : 02

अवधि : 30 घंटे

पेशेवर कौशल पाठ्यक्रम को दो भागों में विभाजित किया गया है:

(क) कॅरियर कौशल

(ख) टीम कौशल

(क) कॅरियर कौशल

उद्देश्य :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है शिक्षार्थियों/अभ्यर्थियों को:

1. कॅरियर कौशल अर्जित करने और एक कॅरियर में सहभागिता के लिए पूरी तरह से तैयार करने में सहायता करने।
2. अच्छा जीवनवृत तैयार करने, साक्षात्कार और समूह परिचर्चा के लिए तैयार करने।
3. किसी व्यक्ति विशेष की शक्तियों, दुर्बलताओं, अवसरों और आशंकाओं को ध्यान में रखते हुए रोजगार बाजार में अपेक्षित कॅरियर अवसरों की तलाश करने में सहायता प्रदान करना है।

अपेक्षित परिणाम :

पाठ्यक्रम के अंत में विद्यार्थी:

1. बिना किसी व्याकरण त्रुटियों और सही वाक्य विन्यास के साथ समुचित टेम्पलेट में अपनी जीवनवृत तैयार करने
2. छद्म साक्षात्कार में शामिल होने
3. लाभकारी रोजगार प्राप्त करने के लिए समूह परिचर्चा में सक्रिय भागीदारी करने
4. नौकरी में अपनी भूमिका के संबंध में आत्म–साक्षात्कार का सिमुलेशन वीडियो प्राप्त करने
5. अभ्यर्थियों द्वारा साक्षात्कार में आमतौर पर की जाने वाली सामान्य त्रुटियों की सूची तैयार करने
6. समूह परिचर्चा में समुचित रूप से
7. कॅरियर के अवसरों के स्रोत (ऑनलाइन/ऑफलाइन) तलाश करने
8. अपनी स्वयं की क्षमता और महत्वाकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए कॅरियर के अवसरों की पहचान करने,
9. किसी अभिचिह्नित व्यवसाय में कॅरियर के लिए तैयारी करने के लिए अपेक्षित आवश्यक घटकों का उपयोग करने (मामला अध्ययन के रूप में) में सक्षम हो सकेंगे।

अवधि : 15 घंटे

मॉड्यूलों की संख्या और शीर्षक :

मॉड्यूल 1 जीवनवृत तैयार करने का कौशल **3 घंटे**

मॉड्यूल 2 साक्षात्कार कौशल **5 घंटे**

मॉड्यूल 3 समूह परिचर्चा कौशल **4 घंटे**

मॉड्यूल 4 कॅरियर के अवसरों की तलाश **3 घंटे**

मॉड्यूल रूपरेखा :

मॉड्यूल 1 : जीवनवृत तैयार करने का कौशल 3 घंटे

i. जीवनवृत तैयार करने का कौशल : तैयारी और प्रस्तुति

- जीवनवृत का परिचय और इसका महत्व
- सार वृत, जीवनवृत और बॉयो–डेटा में भेद
- अच्छे जीवनवृत के आवश्यक घटक

ii. जीवनवृत तैयार करने का कौशल : सामान्य त्रुटियां

- जीवनवृत तैयार करने में लोगों द्वारा आमतौर पर की जाने वाली त्रुटियां
- सभी आवश्यक घटकों को ध्यान में रखते हुए अपना अच्छा जीवनवृत तैयार करना

मॉड्यूल 2 : साक्षात्कार कौशल 5 घंटे

i. साक्षात्कार कौशल : तैयारी और प्रस्तुति

- साक्षात्कार का अर्थ और प्रकार (एफ 2 एफ, टेलीफोनिक, वीडियो इत्यादि)
- ड्रेस कोड, पृष्ठभूमि शोध, क्या करें क्या न करें
- साक्षात्कार देने के लिए स्थिति, कार्य, अभिगम और प्रतिक्रिया (स्टार अभिगम)
- साक्षात्कार प्रक्रिया (शुरूआत, श्रवण कौशल, समापन इत्यादि)
- नौकरी के लिए साक्षात्कार में आमतौर पर पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्न (मुक्त और सीमित प्रश्न)

ii. साक्षात्कार कौशल : सिमुलेशन

- अनुकरणीय साक्षात्कारों का प्रेक्षण।
- छद्म साक्षात्कारों पर विवेचनात्मक टिप्पणी करना।

iii. साक्षात्कार कौशल : सामान्य त्रुटियां

- साक्षात्कार में अभ्यर्थियों द्वारा आमतौर पर की जाने वाली त्रुटियों पर चर्चा करना।
- आदर्श साक्षात्कार का प्रदर्शन।

मॉड्यूल 3 : समूह परिचर्चा कौशल **4 घंटे**

- समूह परिचर्चा का अर्थ और पद्धतियां
- समूह परिचर्चा की प्रक्रिया
- समूह परिचर्चा– सिमुलेशन
- समूह परिचर्चा– सामान्य त्रुटियां

मॉड्यूल 4 : कॅरियर के अवसरों की तलाश करना **3 घंटे**

- स्वयं को जानना – व्यक्तिगत गुण
- कार्यजगत के बारे में जानकारी, स्व–रोजगार सहित नौकरी की अपेक्षाएं
- कॅरियर संबंधी जानकारी के स्रोत
- अपनी क्षमताओं और अवसरों की उपलब्धता के आधार पर कॅरियर के लिए तैयारी करना

शिक्षण पद्धति : प्रत्यक्ष व्याख्यान देने के अतिरिक्त (सैद्धांतिक शिक्षण 20 प्रतिशत तक सीमित होगा और शेष 80 प्रतिशत व्यावहारिक होगा) ध्यान मुख्य रूप से मिश्रित ज्ञानार्जन पर केन्द्रित किया जाएगा। इसमें व्यतिक्रमित कक्षा–कक्ष अभिगम का उपयोग किया जा सकता है जिसमें परियोजना आधारित ज्ञानार्जन, प्रदर्शन, समूह परिचर्चा, अनुरूपता इत्यादि को बढ़ावा दिया जाता है।

सामग्री : दृश्य–श्रव्य सामग्री, ऑनलाइन प्लेटफार्म (स्वयं) फ्यूचरस्किल्स प्लेटफार्म, प्रयुक्त मामले और मामला अध्ययन इत्यादि

मूल्यांकनः ऑनलाइन मूल्यांकन, प्रदर्शन, निर्दिष्ट कार्य - कुछ घटक एनओएस (एसएससी/एन 9005) : आईटी–आईटीईएस सेक्टर से संरेखित किए जा सकते हैं। विद्यार्थियों से पूछे जाने वाले प्रश्नों में बहुविकल्पी प्रश्न, परिदृश्य आधारित, तार्किक योग्यता, समझबोध, अनुरूपता इत्यादि से संबंधित प्रश्न शामिल होंगे। आकलन मॉडल और नमूना आकलन http://nac.nasscom.in/ पर देख सकते हैं

संदर्भ ग्रंथ सूची और दृश्य श्रृव्य सामग्री सहित सुझाई गई पठन सामग्री : कृपया आईटी – आईटीईएस सेक्टर कौशल परिषद् तैयारी कार्यक्रम के निम्नलिखित कार्यक्रम अर्थात्

- फॉउंडेशन स्किल्स इन आईटी (एफएसआईटी)–https://www. Sscansscom/ssc-projects/capacity-building-and-development/training/fsit/ और
- ग्लोबल बिजनेस फॉउंडेशन स्किल्स (जीवीएफएस) https://www. sscnasscom/ssc-projects/capacity-building-and-development/training/gbfs जैसी वेबसाइटें देखें

ख. टीम कौशल

उद्देश्य :

पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थियों को

1. टीम कौशल के महत्व को समझाना और उन्हें ये कौशल अर्जित करने में सहायता करना
2. उन्हें एक व्यक्ति विशेष और एक टीम के रूप में स्थितियों के अनुरूप योजना बनाने, विकसित करने और स्वयं को उनके अनुरूप ढालने में सहायता करना है।

अपेक्षित परिणाम :

इस पाठ्यक्रम का समापन होते–होते विद्यार्थी/अभ्यर्थी :

1. किसी उद्यम में सूचना के प्रवाह के लिए तथा ऑनलाइन/ ऑफलाइन टीम सत्र के दौरान कमान और नियंत्रण से अनौपचारिक सम्प्रेषण की ओर रूपांतरण करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले सामान्य प्रौद्योगिकी संदेश साधनों का उपयोग करने,
2. ऑनलाइन टीम सम्प्रेषण साधन : वेबीनर, स्कॉइप, जूम, गूगल हैंगऑऊट इत्यादि का सक्रिय रूप से उपयोग और प्रचालन करने,
3. टीम कौशलों को समझने और उनका प्रदर्शन करने,
4. कम्प्यूटर, एप्लीकेशन्स, इंटरनेट और साइबर सुरक्षा की बारीकियों से सुपरिचित डिजिटल जीवनशैली में भागीदारी करने,
5. अपनी स्वयं की क्षमता और आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए कॅरियर के अवसरों की तलाश (ऑनलाइन) और पहचान करने,
6. उद्यम संबंधी कवायद की मुख्य आवश्यकताओं की चर्चा करने और उन्हें स्पष्ट रूप से बताने,
7. अंतर्वैयक्तिक संबंधों में सुधार करने के लिए सहकर्मियों से समानुभूति और भरोसा रखने,
8. विविधता का सम्मान करते हुए और अच्छे श्रवण कौशल ग्रहण करते हुए प्रभावी संप्रेषण करने,
9. विविधतापूर्ण, लघुतर आंतरिक विश्व में सम्प्रेषण के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों को पहचानने,
10. वरिष्ठ सहकर्मियों, कनिष्ठ सहकर्मियों, साथियों और हितधारकों के साथ बेहतर संबंधों के लिए अंतर्वैयक्तिक कौशलों को व्यवहार में लाने,
11. अच्छी व्यक्तिगत छवि और सामाजिक शिष्टाचार प्रदर्शित करने ताकि व्यक्ति के चुने गए कॅरियर निर्माण पर सकारात्मक प्रभाव पड़े,
12. विचार–मंथन की संकल्पना के साथ नए विचारों को सृजित, साझा और बेहतरीन बनाने तथा किसी टीम परिचर्चा में व्यक्त किए गए मुख्य विचारों का तथा एक निश्चित समय–सीमा के भीतर लागू किए जाने वाले कार्य बिंदुओं (एमओएम के रूप में) का अभिचिह्नित अनुप्रयोज्य टेम्पलेट में प्रलेखन करने में सक्षम हो सकेंगे।

अवधि : 15 घंटे

मॉड्यूलों की संख्या और शीर्षक :

मॉड्यूल 1 प्रस्तुति कौशल	**5 घंटे**
मॉड्यूल 2 विश्वास और सहयोग	**2 घंटे**
मॉड्यूल 3 टीम कौशल के रूप में श्रवण	**2 घंटे**
मॉड्यूल 4 विचार–मंथन	**2 घंटे**
मॉड्यूल 5 सामाजिक और सांस्कृतिक शिष्टाचार	**2 घंटे**
मॉड्यूल 6 आंतरिक सम्प्रेषण	**2 घंटे**

मॉड्यूल रूपरेखा :

मॉड्यूल 1 : प्रस्तुति कौशल — 5 घंटे

- प्रस्तुति के विविध प्रकार
- आंतरिक और बाह्य प्रस्तुति
- प्रयोजन को जानना
- दर्शकों को जानना
- प्रस्तुति की शुरूआत और समापन
- प्रस्तुति में सहायक साधनों का उपयोग करना
- प्रश्नों का किस प्रकार उत्तर देना है
- विजातीय समूहों के समक्ष प्रस्तुति
- समय बीतने के साथ प्रस्तुति कौशलों में सुधार करने के तरीके

मॉड्यूल 2 : विश्वास और सहयोग — 2 घंटे

- एक सहयोगात्मक टीम बनाने में विश्वास के महत्व को स्पष्ट करना।
- असहमत होने के लिए सहमत होना और सहमत होने के लिए असहमत होना – मिलकर काम करने की भावना।
- अपने बारे में दूसरों द्वारा राय बनाए जाने के भय को समझना और इस भय को दूर करने के लिए कार्यनीति बनाना।

मॉड्यूल 3 : टीम कौशल के रूप में श्रवण — 2 घंटे

- प्रभावी श्रवण के लाभ।
- टीम के सदस्य और टीम के नेता के रूप में श्रवण। विचारों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु सक्रिय श्रवण कार्यनीतियों (पूर्ण और अखंडित मनोयोग, कोई व्यवधान नहीं, कोई पूर्व–सोच नहीं, समानुभूति का उपयोग, लहजे और स्वर परिवर्तन को सुनना, मुद्दों की पुनरावृत्ति इत्यादि) का उपयोग।

मॉड्यूल 4 : विचार–मंथन **2 घंटे**

- विचारों के सृजन को प्रोत्साहित करने के लिए सामूहिक और एकल विचार मंथन तकनीकों का उपयोग।
- टीम सत्र परिणामों के प्रलेखन के सिद्धांतों को सीखना और प्रदर्शित करना।

मॉड्यूल 5 : सामाजिक और सांस्कृतिक शिष्टाचार **2 घंटे**

- शिष्टाचार की आवश्यकता (प्रभाव, छवि, सम्मान अर्जित करना, प्रशंसा इत्यादि) ।
- सामूहिक कार्य को बढ़ावा देने में सामाजिक और सांस्कृतिक/ कॉरपोरेट शिष्टाचार के पहलू।
- समय, स्थान, शिष्टता और विभिन्न संस्कृतियों के प्रति अनुकूलनशीलता।

मॉड्यूल 6 : आंतरिक सम्प्रेषण **2 घंटे**

- टीम के सदस्यों तक सूचना पहुंचाने के लिए डिजिटल और भौतिक चैनलों सहित विभिन्न चैनलों का उपयोग।

शिक्षण पद्धति : प्रत्यक्ष व्याख्यान देने के अतिरिक्त (सैद्धांतिक शिक्षण का 20 प्रतिशत तक सीमित होगा और शेष 80 प्रतिशत व्यावहारिक होगा) इसमें ध्यान मुख्य रूप से मिश्रित ज्ञानार्जन पर केन्द्रित किया जाएगा। इसमें व्यतिक्रमित कक्षा–कक्ष अभिगम का उपयोग किया जा सकता है जिसमें परियोजना आधारित ज्ञानार्जन, प्रदर्शन, समूह परिचर्चा, अनुरूपता और कोचिंग, संगोष्ठियों और अनुशिक्षण इत्यादि का लाभ लिया जाता है।

सामग्री : दृश्य–श्रव्य सामग्री, ऑनलाइन प्लेटफार्म (स्वयं) 'फ्यूचरस्किल्स' प्लेटफार्म।

मूल्यांकन : ऑनलाइन मूल्यांकन, प्रदर्शन, निर्दिष्ट कार्य : कुछ घटक एनओएस (एसएससी/एन 9005) आईटी, आईटीईएस सेक्टर से संरेखित किए जा सकते हैं। विद्यार्थियों से पूछे जाने वाले प्रश्नों में बहुविकल्पी प्रश्न, परिदृश्य आधारित, तार्किक योग्यता, समझबोध, अनुरूपता इत्यादि से संबंधित प्रश्न शामिल होंगे। आकलन (http://nac.nasscom.in/) जैसी वेबसाइट पर देख सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची और दृश्य श्रृव्य सामग्री सहित सुझाई गई पठन सामग्री : कृपया (https://www.sscnasscom/ssc-projects/capacity-building-and-development/training/gbfs)वेबसाइट में ग्लोबल बिजनेस फाउंडेशन स्किल्स (जीवीएफएस) नामक आईटी–आईटीईएस सेक्टर कौशल परिषद् तैयारी कार्यक्रम और एनएसक्यूएफ स्तर 4 से 7 पर जेनेरिक और उद्यमिता एनओएस देखें।

पाठ्यक्रम 3 : नेतृत्व और प्रबंधन कौशल

माड्यूल के संदर्भ में :

नेता समाज के आधार हैं जो जीवन की प्रतिकूलताओं और विद्रूपताओं का सामना करते हैं और उन पर विजय प्राप्त करते हैं। वे अपनी कथनी और करनी से दूसरों को राह दिखाते हैं और प्रेरणादायी आदर्श बनकर सामाजिक जीवन को जीवंत रूप से प्रभावित करते हैं। आज की गला–काट प्रतिस्पर्धा, मूल्यों में अविश्वास, तकनीकी केन्द्रित जटिल जीवनशैली के युग में सामुदायिक जीवनयापन में 'मानव' पर बल देने की अत्यधिक आवश्यकता है। ऐसा युवाओं में अंतर्निहित नेतृत्व कौशलों का पल्लवन और पोषण करके किया जा सकता है ताकि वे इन चुनौतियों को अवसरों में बदल सकें और सृजनात्मक समाधान खोजकर भविष्य के पथप्रदर्शक बन सकें।

माड्यूल के उद्देश्य :

इस मॉड्यूल की परिकल्पना :

- विद्यार्थियों में दूसरे लोगों को प्रभावित और प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक कौशलों का विकास करने के लिए उनकी सहायता करने,
- प्रभावी नेतृत्व के लिए भावनात्मक और सामाजिक बुद्धिमत्ता और एकीकृत सोच विकसित करने,
- समाज के लिए काम करने हेतु एक प्रभावी और अभिप्रेरित दल तैयार करने और बनाए रखने,
- सृजनात्मक और उद्यमितापरक मानसिकता का पोषण करने,
- विद्यार्थियों को व्यक्तिगत मूल्यों को समझाने तथा पेशेवर और सामाजिक संदर्भों में नैतिक सिद्धांतों को लागू करने के लिए की गई है।

प्रत्याशित परिणाम :

पाठ्यक्रम का समापन होते–होते विद्यार्थी :

1. विभिन्न नेतृत्व मॉडलों की जांच–पड़ताल करने और उनकी स्वयं की नेतृत्व शैली को प्रभावित करने और उनके नेतृत्व की दूरगामी सोच का निर्माण कर सकने वाले कौशलों, शक्तियों और योग्यताओं को समझने/उनका आकलन करने,
2. समय प्रबंधन, स्व प्रबंधन, टकराव का निपटारा करने, दल का नेतृत्व इत्यादि जैसे व्यावहारिक कौशल सीखने और प्रदर्शित करने,
3. उद्यमिता संबंधी मूल बातों को समझने और व्यापार योजनाएं तैयार करने,
4. नेतृत्व के लिए पद्धति चिंतन अभिगम का प्रयोग करने,
5. संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण करने के लिए नैतिक आचार और नैतिक मूल्यों के महत्व को समझने में सक्षम हो सकेंगे।

क्रेडिट : 02

अवधि : 30 घंटे

मॉड्यूलों की संख्या और शीर्षक :

मॉड्यूल 1 नेतृत्व कौशल	**6 घंटे**
मॉड्यूल 2 प्रबंधकीय कौशल	**6 घंटे**
मॉड्यूल 3 उद्यमितापरक कौशल	**6 घंटे**
मॉड्यूल 4 नवप्रवर्तनकारी नेतृत्व और डिजाइन चिंतन	**6 घंटे**
मॉड्यूल 5 नैतिक आचार और सत्यनिष्ठा	**6 घंटे**

मॉड्यूल रूपरेखा :

मॉड्यूल 1 – नेतृत्व कौशल 6 घंटे

क. नेतृत्व और इसके महत्व को समझना
- नेतृत्व क्या है?
- नेतृत्व की आवश्यकता क्यों होती है?
- आप किसे एक आदर्श नेता मानते हैं?

ख. नेतृत्व के लक्षण और मॉडल
- क्या नेता जन्मजात होते हैं या बनाए जाते हैं?
- एक प्रभावशाली नेता के मुख्य गुण क्या होते हैं?
- नेतृत्व शैलियां
- विभिन्न नेताओं के परिप्रेक्ष्य

ग. मूल नेतृत्व कौशल
- प्रोत्साहन
- मिल–जुलकर किया जाने वाला कार्य
- समझौता वार्ता
- नेटवर्किंग

मॉड्यूल 2 – प्रबंधकीय कौशल 6 घंटे

क. आधारभूत प्रबंधकीय कौशल
- प्रभावी प्रबंधन के लिए योजना तैयार करना
- दलों का गठन कैसे करें
- प्रतिभावान लोगों की भर्ती करना और उन्हें बनाए रखना
- कार्यों का प्रत्यायोजन
- तालमेल करना सीखना
- संघर्ष प्रबंधन

ख. स्व प्रबंधन कौशल
- स्व संकल्पना को समझना
- आत्मबोध का विकास करना
- आत्म–परीक्षण
- आत्म विनियमन

मॉड्यूल 3 – उद्यमितापरक कौशल 6 घंटे

क. उद्यमिता के मूल तत्व
- उद्यमिता का अर्थ
- उद्यमिता का वर्गीकरण और प्रकार
- उद्यमी के लक्षण और क्षमताएं

ख. व्यापार योजना तैयार करना
- समस्या की पहचान और नए विचार का सृजन
- विचार पुष्टि
- व्यापार के लिए रास्ता बनाना

मॉड्यूल 4 – नवप्रवर्तनकारी नेतृत्व और डिजाइन चिंतन 6 घंटे

क. नवप्रवर्तनकारी नेतृत्व
- भावनात्मक और सामाजिक बुद्धिमता की संकल्पना

- मानव और कृत्रिम बुद्धिमता का संश्लेषण
- वर्तमान वैश्विक नेताओं के लिए संस्कृति का महत्व क्यों है?

ख. 'डिजाइन थिंकिंग'

- 'डिजाइन थिंकिंग'क्या है?
- 'डिजाइन थिंकिंग'के मुख्य तत्व –
  - – खोज
  - – निर्वचन
  - – विचारोद्भव
  - – प्रयोग
  - – उद्विकास
- चुनौतियों को अवसरों में कैसे बदले ?
- सामाजिक हित के लिए मानव केन्द्रित समाधान को कैसे विकसित करें ?

मॉड्यूल 5 : नैतिक आचार और सत्यनिष्ठा 6 घंटे

क. जीवनियों से सीखना

- व्यक्ति को कौन सा गुण महान बनाता है?
- समग्र प्रेरणा प्राप्त करने के लिए किसी नेता के व्यक्तित्व को समझना।
- नेतृत्व के लिए अंतर्दृष्टि प्राप्त करना।
- नेता मुश्किल परिस्थितियों से कैसे पार पाते हैं?

ख. नैतिक आचार और आचरण

- नैतिक आचार का महत्व
- नैतिक निर्णय प्रक्रिया
- व्यक्तिगत और पेशेवर नैतिक आचार संहिता
- सौहार्द्रपूर्ण जीवन का निर्माण

शिक्षण पद्धति : इन मॉड्यूलों के लिए शिक्षण पद्धति निम्नानुसार है:

1. नेतृत्व कौशल – व्याख्यान (वीडियो द्वारा परिवर्धित) नेतृत्व मॉडलों के लिए भूमिका निर्वहन, दल तैयार करने हेतु खेल
2. प्रबंधकीय कौशल – व्याख्यान (वीडियो द्वारा परिवर्धित) मामला अध्ययन (अमूल, टेस्ला, टोयोटा, डीएमआरसी, टाटा ग्रुप, गूगल, मुंबई डब्बावाला), स्वोट विश्लेषण, जोहरी विंडो
3. उद्यमितापरक कौशल– व्याख्यान (वीडिया द्वारा परिवर्धित) मामला अध्ययन और व्यापार योजनाओं का अभ्यास करना
4. नवप्रवर्तनकारी नेतृत्व और डिजाइन चिंतन– व्याख्यानों और वीडियो के माध्यम से संकल्पना पर चर्चा और उसके पश्चात् प्रत्येक बुद्धिमत्ता समुच्चय के लिए भूमिका निर्वहन और अभ्यास, 5 चरणों – खोज, निर्वचन, विचारोद्भव, प्रयोग और उद्विकास का प्रयोग करके गतिविधियां (संदर्भः वर्कबुक ऑफ डिजाइन थिंकिंग बाई आईडीईओ)
5. नैतिक आचार और सत्यनिष्ठा – सुझायी गई कहानियों की सूची में से कहानियों (अहिल्याबाई होल्कर, अब्दुल कलाम, राजा हरिशचन्द्र, महात्मा गांधी, अब्राहम लिंकन) के माध्यम से अनुभवजन्य सीख, दृश्य श्रव्य परिवर्धित भूमिका – निर्वहन और किस्सागोई (अकादमिक, कॉरपोरेट, सामाजिक, खेल, कला इत्यादि जैसे विभिन्न क्षेत्रों के नेता)

मूल्यांकन : इसमें अनुरूपता, मामला अध्ययन और व्यापार योजना सहित लिखित मूल्यांकन और प्रस्तुतियां शामिल हो सकती हैं।

संदर्भग्रंथ सूची और सुझाई गई पठन सामग्री :

पुस्तकें

- अशोकन, एमएस (2015) कर्मयोगी*: ए बायोग्राफी ऑफ ई0 श्रीधरन।* पेंगुइन,ब्रिटेन।
- ब्राउन, टी। (2012)। *चेंज बॉइ डिज़ाइन*। हार्पर बिजनेस
- एलकिंगटन, जे, और हार्टिगन, पी,। (2008)। *दॅ अनरीजनेबल पीपुलः हॉउ सोशल इंटरप्रियोनर्स क्रिएट मार्केटस् देट चेंज द वर्ल्ड।* हार्वर्ड बिजनेस प्रेस।
- गोलमैन, डी। (1995)। *इमोशनल इंटेलीजेंस।* ब्लूम्सबरी पब्लिशिंग इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
- कलाम, ए. ए.। (2003)। *इगनाइटिड माइंडस्ः अनलिशिंग द पावर विदइन इंडिया*। पेंगुइन बुक्स इंडिया।
- केली टी.एंड एकेली डी. (2014)। क्रियेटिव कान्फिडेंसः *अनलिशिंग द* क्रियेटिव *पावर विदिन अस ऑल।* विलियम कॉलिन्स।
- कुरियन, वी., एंड साल्वे, जी. (2012)। आई टू हैड ए *ड्रीम*।रोलीबुक्स प्राइवेट लिमिटेड।
- लिवरमोर, डी.ए.। (2010)। लीडिंग विद कल्चरल *इंटेलीजेंसः द न्यू सीक्रेट टू सक्सेस*। न्यूयॉर्कः अमेरिकन मैनेजमेंट एसोसिएशन
- मैककॉर्मैक, एम. एच. (1986)। वह्राट दे डॉन्ट टीच यू एट *हार्वर्ड बिजनेस स्कूलः ए नोट फ्राम ए स्ट्रीट–स्मार्ट एक्सीक्यूटिव*। आरएचयूएस
- ओ'टोल, जे. (2019) द एनलाइटेन्ड केपेटलिस्टः काशनरी टेल्स ऑफ बिजनस पायनीयर्स हूँ ट्राइड टू डू वेल बाइ डूईंग गुड। हार्परकालिन्स
- सीनेक, एस (2009) *स्टार्ट विद् वह्राय : हाउ ग्रेट लीडर्स इंस्पयार एव्रीवन टू टेक एक्शन।* पेंगुइन
- स्टर्नबर्ग, आर. जे., स्टर्नबर्ग आर. जे.,एंड बाल्टेस पी.बी. (ईडीएस) (2004)। इंटरनेशनल *हैंडबुक ऑफ इंटेलीजेंस* । कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

b&l l k/ku

- फ्राइज़, के. (2019)। आठ आवश्यक योग्यताएँ जो महान नेतृत्व को परिभाषित करती हैं। फोर्ब्स रीट्रीव्ड 2019-02-15 https://www.forbes.com/sites/kimberlyfries/2018/02/08/8-essential-qualities-that-define-great-leadership/#452ecc963b63 द्वारा
- अपना रचनात्मक विश्वास कैसे बनाएँ, डेविड केली द्वारा हल्की–फुल्की बातचीत & https://www.ted.com/talks/david_kelley_how_to_build_your_creative_confidence
- भारत में छिपे हुए अविष्कार के तीव्र विकास परिवेश, अनिल गुप्ता के साथ हल्की–फुल्की बातचीत . https://www.ted.com/talks/anil_gupta_india_s_hidden_hotbeds_of_invention
- भारतीय के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के साथ ज्ञान @ व्हार्टन इंटरव्यूज़ "एक नेतृत्व को पता होना चाहिए कि विफलता का प्रबंधन कैसे करें" https://www.youtube.com/watch?v=laGZaS4sdeU
- मार्टिन, आर. (2007) सफल नेता कैसे सोचते हैं। हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू, *85 (6), 60*।
- नेतृत्व पर एनपीटीईएल पाठ्यक्रम – https://nptel.ac.in/courses/122105021/9

पाठ्यक्रम 4 : सार्वभौमिक मानव मूल्य

पाठ्यक्रम के औचित्य के संदर्भ में :

मानव सभ्यता, अपने द्वारा पोषित और व्यवहार में लाए जाने वाले मूल्यों के लिए जानी जाती है। विभिन्न युगों और स्थानों में ऋषियों, संतों और सिद्ध पुरुषों ने अपने अनुभव के आधार पर ऐसी परिपाटियां विकसित की जिनमें मूल्यों को सर्वाधिक महत्व दिया गया, यद्यपि उन्होंने इसके लिए अलग–अलग नाम दिए क्योंकि उनकी भाषाएं अलग–अलग थी परंतु उनका भाव एक था। सार्वभौम मानव मूल्य वे मूल्य हैं जिन्हें मानव जाति अधिकांश स्थानों और युगों में जाने–अनजाने पोषित करते हैं और संभालती तथा व्यवहार में अपनाती आई है।

त्याग एक बुनियादी मूल्य है। त्याग या लोभहीनता की दो पूर्वशर्तें हैं : सभी जीवों के लिए प्रेम तथा स्वार्थ का न होना। त्याग आत्म–निर्देशित नहीं बल्कि अन्य–निर्देशित होता है और यह सबके कल्याण के उद्देश्य से सभी स्वरूपों और प्रकारों में जीवन भर के लिए किया जाता है। त्याग की शुरुआत स्वार्थ के अंत के साथ होती है। जीवन की समस्याओं से भाग खड़े होना त्याग नहीं कायरता होती है। कर्म के बिना त्याग का अर्थ है परजीवी बनकर जीना। इसके अतिरिक्त, सेवा केवल तभी की जा सकती है जब कर्म युक्त त्याग की शुरुआत होती है। त्याग के बिना अहंकार रहित सेवा अकल्पनीय है, और सच्ची सेवा केवल प्रेम और करूणा के माध्यम से ही संभव है। जीवन और मृत्यु अटल सत्य हैं और तथ्य के रूप में सत्य तथा मूल्य के रूप में सत्य के बारे में भी यही बात लागू होती है। सत्य, जीवन और मृत्यु के दो छोर के बीच में रहता है और इसका अनुशीलन करना होता है।

सत्य, प्रेम, शांति, अहिंसा और सदाचार सार्वभौमिक मानव मूल्य हैं। त्याग, करूणा और सेवा भी सर्व स्वीकार्य मानव मूल्य हैं जिन्हें व्यावहारिक रूप में नेकनीयती, ईमानदारी, नीति परायणता, विनय, कृतज्ञता, आकांक्षा, समृद्धि, अहिंसा, भरोसा, विश्वास, क्षमाशीलता, दया, शांति और इसी तरह के भिन्न–भिन्न नाम दिए गए हैं। इन सबकी विश्व शांति के लिए जरूरत होती है।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थियों को उनके व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक अन्य पहलुओं की उपेक्षा किए बिना उन्हें सार्वभौम मानव मूल्यों के बारे में समग्र रूप से सजग बनाना है।

उद्देश्य :

वर्तमान पाठ्यक्रम में सार्वभौम मानव मूल्यों का अर्थ, प्रयोजन और उनकी प्रासंगिकता बताने के साथ ही यह भी बताया गया है कि एक अच्छा इंसान बनने और अपनी क्षमताओं को साकार करने के लिए उनको सजगतापूर्वक किस प्रकार से अपने अन्दर जाग्रत किया जाए और व्यवहार में अपनाया जाए।

ज्ञानार्जन परिणाम :

इस पाठ्यक्रम का समापन होते–होते शिक्षार्थी :

1. सार्वभौम मानव मूल्यों के बारे में जानने और व्यक्तिगत, सामाजिक, परिवेश, पथ, कॅरियर और राष्ट्रीय जीवन में मूल्यों के महत्व को समझने,
2. मानव मूल्यों का अनुशीलन और व्यवहार करके आत्म साक्षात्कार करने वाले महान और सफल व्यक्तियों के जीवन के मामला अध्ययन ों से सीख लेने,
3. मानव मूल्यों के सजग व्यवहारी बनने,
4. मानव के रूप में अपनी क्षमताओं को जानने और दुनिया की रीति–नीति में अपना आचार–व्यवहार सही रखने में सक्षम हो सकेंगे।

क्रेडिट : 02

अवधि : 30 घंटे

मॉड्यूलों की संख्या और शीर्षक :

मॉड्यूल 1: प्रेम और करूणा **5 घंटे**

मॉड्यूल 2: सत्य **5 घंटे**

मॉड्यूल 3:अहिंसा **5 घंटे**
मॉड्यूल 4: नीति परायणता **5 घंटे**
मॉड्यूल 5:शांति **4 घंटे**
मॉड्यूल 6:सेवा **3 घंटे**
मॉड्यूल 7:त्याग **3 घंटे**

मॉड्यूल रूपरेखा :

मॉड्यूल 1 – प्रेम और करूणा 5 घंटे

- परिचय : प्रेम क्या है? प्रेम के प्रकार – स्वयं, माता–पिता, परिवार, मित्र, पति/पत्नी, समुदाय, राष्ट्र, मानवता और अन्य चीजों, सजीव और निर्जीव दोनों के लिए।
- प्रेम और करूणा तथा अंतर्संबंध।
- प्रेम, करूणा, समानुभूति, सहानुभूति और अहिंसा ।
- ऐसे लोग जिन्हें प्रेम और करूणा को अपने जीवन में व्यावहारिक रूप में अपनाने के लिए इतिहास में याद किया जाता है।
- इतिहास, स्थानीय लोकगाथाओं सहित साहित्य से कथाएं और किंवदंतियां।
- प्रेम और करूणा का जीवन में व्यवहार : यदि शिक्षार्थी प्रेम और करूणा को अपने व्यवहार में लाते हैं तो वे क्या सीखेंगे/ पाएंगे? यदि वे प्रेम और करूणा को अपने जीवन में नहीं अपनाते हैं तो वे क्या खो देंगे?
- शिक्षार्थी के व्यक्तिगत और/अथवा सामूहिक अनुभव(वों) को साझा करना।
- अनुरूपित परिस्थितियां।
- मामला अध्ययन ।

मॉड्यूल 2– सत्य 5 घंटे

- परिचयः सत्य क्या है? सार्वभौम सत्य, मूल्य के रूप में सत्य, तथ्य के रूप में सत्य (सत्यता, नेकनीयती, दूसरों के बीच ईमानदारी)
- ऐसे व्यक्ति जो इस मूल्य का व्यवहार करने के लिए जाने जाते हैं।
- इतिहास और स्थानीय लोकगाथाओं सहित साहित्य से कथाएं और किवदंतियां।
- सत्य का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग : यदि शिक्षार्थी सत्य का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करते हैं तो वे क्या सीखेंगे/पाएंगे? यदि शिक्षार्थी अपने व्यावहारिक जीवन में सत्य का प्रयोग नहीं करते हैं तो वे क्या खो देंगे?
- सत्य के बारे में शिक्षार्थी के व्यक्तिगत और/अथवा समूह अनुभव(वों) को साझा करना।
- अनुरूपित स्थितियां।
- मामला अध्ययन।

मॉड्यूल 3– अहिंसा 5 घंटे

- परिचयः अहिंसा क्या है? अहिंसा की पूर्वापेक्षाओं के रूप में इसमें प्रेम, करूणा, दूसरों के लिए समानुभूति, सहानुभूति की आवश्यकता होती है।
- हिंसा न करने और किसी को न मारने के रूप में अहिंसा।
- व्यक्ति और संगठन जिन्हें अहिंसा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है।
- इतिहास और स्थानीय लोकगाथाओं सहित साहित्य से अहिंसा के बारे में कथाएं और किवदंतियां।
- अहिंसा का व्यावहारिक जीवन में प्रयोगः यदि शिक्षार्थी अहिंसा का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करते हैं तो वे क्या सीखेंगे/ पाएंगे? यदि शिक्षार्थी अपने व्यावहारिक जीवन में अहिंसा का प्रयोग नहीं करते हैं तो वे क्या खो देंगे?
- अहिंसा के बारे में शिक्षार्थी के व्यक्तिगत और/ अथवा समूह अनुभव(वों) को साझा करना।
- अनुरूपित परिस्थितियां।
- मामला अध्ययन।

मॉड्यूल 4– नीति परायणता 5 घंटे

- परिचय : नीति परायणता क्या है?
- नीति परायणता और धर्म, नीति परायणता और मर्यादा।
- ऐसे व्यक्ति जिन्हें जीवन में नीति परायणता का व्यावहारिक प्रयोग करने के लिए इतिहास में स्मरण किया जाता है।
- इतिहास और स्थानीय लोकगाथाओं सहित साहित्य से कथाएं और किवदंतियां।
- नीति परायणता का व्यावहारिक जीवन में प्रयोगः यदि शिक्षार्थी नीति परायणता का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करते हैं तो वे क्या सीखेंगे/पाएंगे? यदि शिक्षार्थी अपने व्यावहारिक जीवन में नीति परायणता का प्रयोग नहीं करते हैं तो वे क्या खो देंगे?
- नीति परायणता के बारे में शिक्षार्थी के व्यक्तिगत और/अथवा समूह अनुभव(वों) को साझा करना।
- अनुरूपित परिस्थितियां।
- मामला अध्ययन ।

मॉड्यूल 5– शांति 4 घंटे

- परिचय : शांति क्या है? इसके लिए, शांति, सोहार्द्र और संतुलन की आवश्यकता होती है।
- ऐसे व्यक्ति और संस्थाएं जो शांति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते हैं।
- इतिहास और स्थानीय लोकगाथाओं सहित साहित्य से शांति के बारे में कथाएं और किंवदंतियां।
- शांति का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग : यदि शिक्षार्थी शांति का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करते हैं तो वे क्या सीखेंगे/पाएंगे? यदि शिक्षार्थी अपने व्यावहारिक जीवन में शांति का प्रयोग नहीं करते हैं तो वे क्या खो देंगे?
- शांति के बारे में शिक्षार्थी के व्यक्तिगत और/अथवा समूह अनुभव(वों) को साझा करना।
- अनुरूपित परिस्थितियां।
- मामला अध्ययन ।

मॉड्यूल 6 : सेवा 3 घंटे

- परिचय : सेवा क्या है? सेवा के प्रकार – स्वयं, माता–पिता, परिवार, मित्र, पति/पत्नी, समुदाय, राष्ट्र, मानवता और अन्य प्राणियों – सजीव और निर्जीव, संकट और आपदा में पड़े व्यक्तियों के लिए सेवा।
- ऐसे व्यक्ति जिन्हें इस मूल्य का अपने व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करने के लिए इतिहास में याद किया जाता है।
- इतिहास, स्थानीय लोकगाथाओं सहित साहित्य से सेवा के दृष्टांत वाली कथाएं और किवदंतियां।
- सेवा का व्यावहारिक जीवन में प्रयोगः यदि शिक्षार्थी सेवा का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करते हैं तो वे क्या सीखेंगे/पाएंगे? यदि शिक्षार्थी अपने व्यावहारिक जीवन में सेवा का प्रयोग नहीं करते हैं तो वे क्या खो देंगे?
- सेवा के बारे में शिक्षार्थी के व्यक्तिगत और/अथवा समूह अनुभव(वों) को साझा करना।
- अनुरूपित परिस्थितियां।
- मामला अध्ययन।

अतिरिक्त प्रयोगात्मक मॉड्यूल अथवा क्रियात्मक वैकल्पिक पाठ्यक्रम

नोट : संकाय/संस्थान शिक्षार्थियों के स्तर और विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित मॉड्यूलों में से कोई/कुछ मॉड्यूल चुन सकता है।

मॉड्यूल कः अखंड मानव सुख 5 घंटे

सुख का महत्व, विभिन्न प्रकार के सुख का अंतर्संबंध और सुख की परिभाषा (सहज, स्वस्थ, खुश और समवृत्ति में रहने की स्थिति)

सुख और इसके प्रकार

(i) भौतिक (शारीरिक शक्ति और सहनशक्ति)

(ii) भावनात्मक (भावनाओं के प्रति प्रतिक्रिया करने और उन्हें नियंत्रित करने की योग्यता)

(iii) सौन्दर्य (सभी में सुन्दरता को देखने और सराहना करने की मनःस्थिति)

(iv) बौद्धिक (विवेकपूर्ण, तार्किक सुख)

(v) संबंधगत सुख (स्वयं, माता–पिता, परिवार, समाज, राष्ट्र, मानवता और ब्रह्मांड में अन्य प्राणियों के प्रति दायित्व, अन्य लोगों को स्वीकार करते हुए उनके साथ रहना)

(vi) नैतिक (अच्छाई और बुराई के बीच भेद और अच्छाई, नीति परायणता को व्यवहार में अपनाना)

(vi) अध्यात्मिक (स्वयं से इतर सोचना, इन्द्रियों से आध्यात्मिक स्तर तक की यात्रा)

विभिन्न प्राणियों में सन्निहित परंतु मानव द्वारा सजगतापूर्वक समझे गए सुख की विभिन्न अवस्थाओं की सुस्थापना और पहचान करना।

दिए गए क्रियाकलापों के माध्यम से व्यक्ति में सर्वाधिक सुस्पष्ट भावनाओं की पहचान करना

विभिन्न सुखों की पहचान करने में सहायता के लिए किवंदंतियां/ वीडियो/ क्रियाकलाप

सुख से जुड़े मूल्यों के संबंध में चर्चा : सौंदर्य, नैतिक आचार, क्षमाशीलता और आध्यात्मिक स्वास्थ्य अर्थात् इन्द्रियों और स्वयं से इतर सोचना और दूसरों के कल्याण के लिए सोचना।

मामला अध्ययन/गतिविधि के माध्यम से सुख का महत्व और उसका अभ्यास।

विभिन्न प्रकार से सुख प्राप्त करने के तरीके।

गतिविधियां।

मॉड्यूल खः योग और प्रणायाम

योग और प्राणायमा का महत्व

- अखंड सुख और जीवन में संतुलन के लिए योग और प्राणायाम।
- योग और प्राणायाम : परिचय
- मन–शरीर–प्रज्ञा
- योग और प्राणायाम के बीच अंतर और उनका अंतर्संबंध
- विद्यार्थियों के लिए प्रारंभिक योगासन और प्राणायाम

क. प्रत्येक प्रातःकाल

ख. शयनकाल से पूर्व

ग. प्रस्तुति से पूर्व

घ. परीक्षा से पूर्व

ड. पेटदर्द से छुटकारा पाने के लिए

च. तनाव को भगाने के लिए

- स्वस्थ आहार
- स्वस्थ मन
- योग और प्राणायाम के लिए संस्तुत दिनचर्या

मॉड्यूल गः कृतज्ञता

रूपरेखाः

1. कृतज्ञता, व्यक्ति के मानसिक गुण का बेहतरीन अलंकरण
2. कर्तव्य बनाम अधिकार
   - कर्तव्य क्या है?
   - अधिकार क्या है?
3. विस्मय और सरलता
4. अपने परिवार के प्रति कृतज्ञता
5. अपने शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता
6. अपने समाज के प्रति कृतज्ञता
7. अपने राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता
8. ब्रह्मांड के प्रति कृतज्ञता
9. अपने आर्शीवाद गिनिए (गतिविधि)
10. कृतज्ञता के भाव में रहिए

शिक्षण पद्धति :

ज्ञानार्जन एक चुनौतीपूर्ण, रमणीय और आनन्दप्रद गतिविधि है। शिक्षार्थियों को रटंत विद्या के बनिस्पत शिक्षा के प्रति अत्यधिक केन्द्रित दृष्टिकोण को अपनाकर ज्ञानार्जन और आत्म–अन्वेषण की दुरूह प्रक्रिया में लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सार्वभौमिक मानव मूल्यों के शिक्षण और ज्ञान अर्जन शिक्षण पद्धति में परिक्षेत्र या निष्कर्ष आधारित दृष्टिकोण से हटकर अनुभवजन्य या प्रक्रिया आधारित दृष्टिकोण को अपनाया जाना चाहिए।

संकाय को 20:30:50 सिद्धांत के आनुपातिक मान पर मूल्यों के ज्ञानार्जन को प्रोत्साहित करना चाहिए जहां व्याख्यान परिदान का 20 प्रतिशत (श्रवण); दृश्य ज्ञानार्जन पद्धति का 30 प्रतिशत (दर्शन) और अनुभव 50 प्रतिशत (कर्म) हिस्सा हों। जरूरतों के हिसाब से इस अनुपात में बदलाव किया जा सकता है।

ध्यान केन्द्रित आधारित ज्ञानार्जन और सर्वांगीण विकास के उद्देश्य की पूर्ति करने की दृष्टि से, संकाय/सुविधाप्रदाताओं को विभिन्न प्रकार की ज्ञान परिदान पद्धतियों का प्रयोग करना चाहिएः अंतर्क्रियात्मक व्याख्यान ताकि

विद्यार्थी विषय क्षेत्र में नई अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए अपने शिक्षकों के साथ काम करें और वे उच्चतर शिक्षा के लिए अपने स्वयं के सेतु बनाने में सक्षम हों, समूह में मूल्यों के संबंध में चर्चा और वास्तविक जीवन के मुद्दों में उनका व्यावहारिक उपयोग, विद्यार्थियों को वास्तविक जीवन की स्थितियों और परिदृश्यों को समझने के अवसर प्रदान करने और नियंत्रित वातावरण में चुनौतियों का समाधान करने के लिए अनुरूपता (सिमुलेशन) या विद्यार्थियों को नई (स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय) स्थितियों में अवस्थित करके/ पहुंचाकर सांस्कृतिक अनुभवों का अनुरूपण करने के लिए उन स्थितियों का उपयोग करना, मामला अध्ययन, भूमिका–निर्वहन टीम कार्य, विद्यार्थियों को ऐसे व्यक्तियों या संगठनों को देखने का अवसर प्रदान करने के लिए अध्ययन दौरे करवाना जो इन मूल्यों का व्यवहार में प्रयोग करते हैं और अपने स्वयं तथा मानवता की भलाई में योगदान करते हैं।

शिक्षकों/ सुविधाप्रदाताओं को सत्र संचालन में शिक्षण पद्धति और प्रौढ़ शिक्षा पद्धति का युक्तियुक्त प्रयोग करना चाहिए।

आकलन :

स्व–आकलन, प्रतिपुष्टि, व्यावहारिक मामलों संबंधी निर्दिष्ट कार्य, पेनल चर्चा, एकल और सामूहिक गतिविधियां, प्रश्नोत्तर सत्र, आमंत्रित प्रेरणाप्रद वार्ताएं, और एक या अधिक मूल्यों का व्यावहारिक प्रयोग करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं के क्षेत्र दौरे।

नोट :

प्रत्येक विद्यार्थी प्रत्येक मॉड्यूल/ सत्र के पश्चात् 'रिफ्लेक्शन जर्नल' में अपने दैनिक ज्ञानार्जन का रखरखाव करेगा। संकाय, आमुख कार्यशाला के पश्चात् 'रिफ्लेक्शन जर्नल' के अभिलेख का रखरखाव करेगा।

सुझाई गई पठन सामग्री :

राधा मुकर्जी कुमुद, *एनसिएंट इंडियन एजुकेशन, मोतीलाल बनारसीदास*

स्वामी सत्यानन्द *सरस्वती, आसन प्रणायाम मुद्राबंध,* बिहार, योग विद्यालय।

जोशी किरीट, *एजुकेशन फॉर करेक्टर डेवलपमेंट,* धर्म हिंदुजा सेंटर ऑफ इंडिक स्टडीज।

रोकीच मिलन (1973) द नेचर ऑफ ह्यूमन वेल्यूज, न्यूयार्क : द फ्री प्रेस

घोष, श्री अरविन्द, 1998: *दॅ फाउण्डेशन्स ऑफ इंडियन कल्चर,* पांडिचेरी : श्री अरविन्द आश्रम

ए. एल. बाशम, *द वंडर दैट वाज इंडिया,* लंदन पिकाडोर प्रेस

पात्रा, अविनाश (2012), *द स्प्रिच्युअल लाइफ एंड कल्चर ऑफ इंडिया,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

शांतिकुमार घोष, *यूनिवर्सल वेल्यूज,* द रामकृष्ण मिशन, कोलकाता, 2004

नोटः

1. शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं और रूचि को ध्यान में रखते हुए संकाय द्वारा पुस्तकें, ऑडियो, वीडियो और ई–संसाधन शामिल किए जा सकते हैं।

जीवन कौशल के लिए विशेषज्ञ समिति के सदस्य

1. प्रो. स्वर्गीय अवधेश कुमार सिंह, कुलपति,ऑरो यूनिवर्सिटी, सूरत – 394 510
2. प्रो. (श्रीमती) किरण माथुर, प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), मनोविज्ञान, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल – 462013
3. प्रो. आदित्य शास्त्री, कुलपति, बनस्थली विद्यापति, राजस्थान – 304022
4. श्री सोम मित्तल, पूर्व अध्यक्ष, नैसकॉम, नई दिल्ली – 110013
5. प्रो. अमिता चटर्जी, एमेटिटस प्रोफेसर, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता – 700053
6. श्री राघव श्रीनिवासन, क्षेत्रीय प्रमुख, आईसीटी अकादमी, नई दिल्ली – 110066
7. प्रो. अविनाश धर्माधिकारी चाणक्य, (सेवानिवृत्त आईएएस), पुणे – 411030
8. प्रो. (श्रीमती) गीता मेनन, चिन्मय अकादमी, अन्ना नगर, चेन्नई – 600040

सत्यमेव जयते

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

गुणवत्ता अधिदेश

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

उद्देश्य

उच्चतर शिक्षा संस्थानों द्वारा निम्नलिखित पहल की जानी हैं :-

1. विद्यार्थियों के लिए आरंभिक प्रेरण कार्यक्रम-दीक्षारंभ।
2. अध्ययन- निष्कर्ष आधारित पाठ्यक्रम रचना-नियमित अंतराल पर पाठ्यक्रम में परिशोधन (LOCF)।
3. प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया हेतु सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना -MOOC, और ऑनलाइन उपाधियाँ।
4. विद्यार्थियों हेतु व्यावहारिक कौशल-जीवन कौशल
5. प्रत्येक संस्थान हेतु समाजिक एवं उद्योग वर्ग से संपर्क, प्रत्येक संस्थान, ज्ञान के परस्पर आदान-प्रदान तथा ग्रामीण समुदायों की समग्र सामाजिक/आर्थिक समुन्नति हेतु कम से कम 5 गावों का अभिग्रहण करेगा। नियोजन योगयता में सुधार करने के लिए विश्वविद्यालय-उद्योग के बीच संपर्क को बढ़ावा देना।
6. परीक्षा प्रणाली में सुधार-परिकल्पना की जांच एवं अनुप्रयोग।
7. पाठ्यक्रम के पूरा होने के पश्चात, विद्यार्थि प्रगति की जानकारी रखना व पूर्व छात्र नेटवर्क।
8. संकाय प्रेरणा कार्यक्रम (FIP) शिक्षण में वार्षिक पुनश्चर्या कार्यक्रम (ARPIT) तथा शिक्षा प्रशासकों के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण (LEAP)।
9. भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए परा-विद्या संबंधी अनुसंधान योजना (STRIDE) और कन्सोटियम फॉर एकेडेमिक एंड रिसर्च एथिक्स (CARE)
10. गैर प्रत्यायित संस्थानों को मार्गदर्शन उपलब्ध कराना (परामर्श)

उच्चतर शिक्षा संस्थान (HEIs) गुणवत्ता सुधार हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को 2022 तक प्राप्त करने का प्रयास करेंगे

विद्यार्थियों के लिए स्नातक परिणामों में सुधार, जिससे की उनमें से कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थी अपने लिए रोजगार/ स्व-रोजगार सुरक्षित कर सकें, या उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाएँ।

विद्यार्थियों का समाज/उद्योग वर्ग के साथ सामंजस्य स्थापित करना जिससे कि कम से कम दो-तिहाई छात्र, संस्थानों में अपने अध्ययन के दौरान, सामाजिक गतिविधियों मे भागीदारी कर सकें।

विद्यार्थियों को आवश्यक व्यावसायिक और व्यवहार कौशल का प्रशिक्षण प्रदान करन जैसे सामूहिक कार्य, सम्प्रेषण कौशल, नेतृत्व कौशल, समय-प्रबंधन कौशल आदि मे पारंगत करना, मानवीय मूल्यों एवं व्यवसायगत नीतियों का संचार करना, नवप्रवर्तन / उद्धमशीलता तथा विद्यार्थियों मे समालोचनात्मक चिंतन की भावना को जाग्रत करना तथा इन प्रतिभाओं के प्रदर्शन के लिए अवसर प्रदान करना।

यह सुनिश्चित करना की शिक्षक रिक्तियों में किसी भी समय पर, स्वीकृत क्षमता के 10 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि नहीं हो तथा शत-प्रतिशत शिक्षक अपने संबन्धित ज्ञान क्षेत्र में नवीनतम एवं उभरती जानकरियों एवं शिक्षण विधियों का ज्ञान रखते हों, जिससे वो विद्यार्थियों को प्रभावशाली तरीके से विषय को समझा सकें।

वर्ष 2022 तक, प्रत्येक संस्थान, न्यूनतम 2.5 प्राप्तांकों सहित राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) द्वारा प्रमाणित हो।

उच्चतर शैक्षिक संस्थानों द्वारा की जाने वाली पहल

ज्ञान–विज्ञान विमुक्तये

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग

University Grants Commission

quality higher education for all